Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

ISSUE No- (CCCIV)304

July -2021

Impact of Race, Caste, Class and Religion on Indian and International Society

Prof. Virag S. Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research & Development Training Institute Amravati

Dr Nitin A. Mathankar
Executive-Editor
Principal,
Late Vasantrao Kolhatkar Arts College, Rohana

Dr. Deoman S. Umbarkar
Editor
Organizing Secretary
,Department of Sociology
Late Vasantrao Kolhatkar Arts College, Rohana

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

64	जाती,वर्ण आणि धर्माचा बेरोजगारी व रस्वातंत्र्योत्तर परिणाम **डॉ. अनुपमा नितिन लाभे**	**300**
65	जात, वर्ग, धर्म का भारतीय अर्थव्यस्थापर प्रभाव **डॉ. अजय नानाजी सरटकर**	**303**
66	भारतीय समाज व जातीव्यवस्था **प्रा. अनिल रा. गावंडे**	**306**
67	जातिव्यवस्था — आंतरजातीय विवाह **वंदना वा. चरडे**	**309**
68	जैन समुदायावरील जाती, वर्ग आणि धर्म यांचा प्रभाव **प्रा.डॉ. सुनील पखाले**	**311**
69	भारतातील जातीचो संकल्पना व जातिव्यवस्थेची भूमिका **सहा. प्रा. डॉ .शीतल उजाडे**	**313**
70	जाती, वर्ग आणि धर्म यांचा मानवतेवर परिणाम **डॉ.प्रेमा लेकुरवाळे चोपडे**	**316**
71	जात,वर्ग आणि धर्माचा स्त्रियांवरील प्रभाव **प्रा. रमेश एम. भगत**	**320**
72	विविध खाद्यसंस्कृतीचा भारतीय समाजावरील परिणाम **डॉ.रागिणी राजेंद्र पाध्ये**	**322**
73	समाजातील जातीवाद आणि दलितांच्या अस्तित्वातील उद्धराची कार्ये **Dr. Priyanka kewaldas Ambade (ukey)**	**325**
74	भारताचे सागरी धोरण **Pravin karbhari Shinde**	**332**
75	तुकाराम महारांजाची हिंदी रचना **डॉ. प्रा. प्रवीण कारंजकर**	**337**
76	भारतीय राजकारणात जात व वर्ग यांचा प्रभाव **प्रा. डॉ. नितीन दादाराव गौरखेडे**	**340**
77	धावक आणि गैर धावकांची लवचिकता चे तुलनात्मक अध्ययन **डॉ.मार्कंड चौरे (प्र.प्राचार्य)**	**343**
78	जात, वर्ग आणि धर्माचा आदिवासींवर होणारा परिणाम **प्रा.डॉ. लोमेश्वर रामचंद्रराव घागरे**	**345**
79	गुप्त काल में हिन्दू धर्म का प्रभाव **कुसुम राय**	**347**
80	डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर और उनके शौक **डॉ. जयंत कुमार वी. रामटेके**	**349**
81	वैद्यकिय नीतिशास्त्राचे स्वरूप आणि तत्वे : एक नीतिशासत्रीय विवेचन **डॉ. अतुल म. महाजन**	**353**
82	हिंदी उपन्यासों में वर्ण संघर्ष के स्वर **प्रा.हिरा पोटकुले**	**360**
83	लोकशाही आणि नीतिमत्तेची गरज **प्रा. कृष्णा क.मेश्राम**	**363**

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) –7.675, Issue NO, 304 (CCCIV)
ISSN : 2278-9308
July 2021

हिंदी उपन्यासों में वर्ण संघर्ष के स्वर

प्रा.हिरा पोटकुले
कला व विज्ञान महाविद्यालय,शिवाजीनगर गढी.
potkuleh@gmail.com 8600858052

जब मनुष्य भूखा, नंगा, बर्बरऔर ज्ञान से कोसों दूर था तब इस समय में समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए 'धर्म' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेकिन आगे चलकर धर्म पर विचार करने वाले अलग-अलग गट तैयार हो गए और धर्म की अलग-अलग संस्था बन गई। जिस धर्म की स्थापना समाज व्यवस्था बनाए रखने के लिए की गई थी वही धर्म स्वयं ही समाज में अव्यवस्था फैलाने लगा, परिणाम स्वरूप समस्याएं उत्पन्न हुई। सदियों से गुलाम रहे इस भारतीय समाज में प्राचीन काल से वर्णव्यवस्था स्थित थी। प्राचीन काल से जातीयता पर आधारित इस वर्णव्यवस्था में निम्न (शूद्र)वर्ग के लोगों को दास,गुलाम, सेवक बनाकर रखा और उन पर अत्याचार किए गए। हिंदू धर्म के इस वर्णव्यवस्था का विरोध बौद्ध काल में हुआ था। इस काल में महात्मा बुद्ध ने इस व्यवस्था से अलग एक व्यवस्था की स्थापना की जिसमें सब जाति, धर्म, संप्रदाय के लोगों को सम्मिलित करके भारतीय समाज के वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था को आव्हान दिया। आगे चलकर छत्रपति शिवाजी महाराज, शाहू महाराज, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैसे अनेक महात्माओं ने इस व्यवस्था का विरोध किया। बहुजन समाज को जागृत करने के लिए यथा संभव प्रयास किया। जिसे सदियों से रौंदा गया, कुचला गया था।इस अन्य अत्याचार से पीड़ित भारतीय दलित, आदिवासी, बहुजन समाज को अन्याय के विरोध में खड़ा होने के लिए शिक्षा के महत्व को अवगत कराया। डॉ. अंबेडकर जी ने भारतीय समाज में सामाजिक समता, सर्वधर्म समभाव, बंधुता का प्रचार किया साथ ही स्वतंत्रता के बाद संविधान के माध्यम से दलित आदिवासी समाज को मानवता का अधिकार प्रदान किया।

आज के वैज्ञानिक युग में भी ऊंच-निचता, जातीयता का बोलबाला हमें दिखाई देता है। स्वतंत्रता के इतने सालों बाद भी भारतीय समाज में दलित और आदिवासी जनजातियों को जीवन जीने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करते हुए संघर्ष से गुजरना पड़ता है उसका चित्र आज की समकालीन लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में यथार्थता के साथ किया है। इदन्नमम,चाक, अल्मा कबूतरी जैसे उपन्यासों में दलित और आदिवासियों के संस्कृति से परिचित कराते हुए उनकी समस्याओं को भी उद्घाटित किया है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने आदिवासी जनजाति उनके जीवन की समस्याओं और शोषण को ही नहीं बल्कि उनके सामाजिक सांस्कृतिक जीवन को, उत्सव, पर्व और त्योहार, अंधविश्वास, रूढी परंपरा, आचार- विचार, आवास -निवास, जीवन यापन करने के संसाधन आदि को हमारे सामने रखा है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में आदिवासियों की स्थिति का ना घर की ना घाट की ऐसी हो गई है। एक ओर भारत सरकार आदिवासियों को योजनाओं के माध्यम से सुनहरे सपने दिखाते हैं और दूसरी और अपनी मुट्ठी से खिसकती अपनी जमीन के बीच आदिवासी पिसते जा रहे हैं। मैत्रेई पुष्पा जी ने 'अल्मा कबूतरी' इस उपन्यास में कबूतर समाज की आर्थिक विपन्नता, शिक्षा से दूर, ऊंच-निचता को बखूबी चित्रित किया है। आदिवासी समाज में आर्थिक विपन्नता के कारण स्त्रिया फटे कपड़े पहन कर अपने शरीर को ढकने का असफल प्रयत्न करती है। कदमबाई अपने ढेरे पर आते लोगों को देखकर अपने बदन फटे कपड़ों से ढकने का असफल प्रयास करती है। आर्थिक विपन्नता के कारण यह आदिवासी स्त्रिया ऊंची जात वाले लोगों के हवस ,शोषण का शिकार हो जाती हैं। कदमबाई का बेटा राणा

इसी शोषण से पैदा हुआ है जिसका जिम्मेवार मंसाराम कजा जाती (बड़े लोग) का है। कदमबाई का बेटा राणा कज्जा जैसा रहन-सहन, खानपान की इच्छा रखता है लेकिन मां के कहने पर वह अपने अभावों को अपने पिता मंसाराम से छुपाना जान जाता है। ऊंची जाति के लोगों द्वारा आदिवासी स्त्रिया, बच्चे या बड़े- बुजुर्ग के सताए जाने को राणा स्विकार करता है। आदिवासी लोग परिस्थितीयों के अनुसार अपने आप को बदल देते हैं। स्कूल में मास्टर जी द्वारा दिए गए लेख में राणा अपनी असलियत लिखता है " पिटना-पीटना, मरना -मारना हमारी जिंदगी हैं। गुनिया, ओझा, मुखिया और पुलिस हमारे भगवान है। कज्जा लोग मायबाप और मालिक । भूख- प्यास हमारी गुइया है। देह जब गर्मी से जलने लगती है, तो हम चोरी से तालाब में नहा लेते हैं। जाड़े में जब हड्डियां चटकने लगती है, जंगल में से इंधन चुराकर देह सेक लेते हैं। सब लोग हमें माफ कर दें,बस इतना चाहते हैं।"...सचाई से रहो, ईमानदारी से जियों,नफरत त्याग दोन -यह सब किताबों में लिखाण है।एकदम झूठ।यह हमारे लिये नहीं।लोग हमें घराणे हैं,हम डर के मारे झूठ बोलते हैं, बेइमानी पर चलते हैं,नफरत करते हैं।" (१)

वैश्वीकरण के इस दौर में भी भारतीय समाज में जाति श्रेष्ठता के कारण उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को सभी अधिकारों से वंचित रखना चाहते हैं, चाहे वह शिक्षा ही क्यों न हो। रूढ़िवादी मानसिकता के कारण शिक्षा लेने वाले दलित आदिवासियों को अनेक प्रकार का अत्याचार सहना पड़ता है। यही मानसिकता आज भी गांव, देहातों, पहाड़ी इलाकों में देखने को मिलते हैं। स्वतंत्रता के समय आदिवासियों को चोर-उचुके कहकर गांव के बाहर ही भटकते हुए जिंदगी गुजारनी पड़ती थी।अल्मा के पिता रामसिंह की मां ने भी अपने बेटे को पढ़ाने की मंशा पाली थी। रामसिंह को पढ़ाने के लिए उसकी मां को अपनी इज्जत को नीलाम करना पड़ा ,"माते, पुजारी, सिपाही मास्टरों के जरिए रामसिंह के लिए इज्जत खरीदनेवाली मां बेहिचक बेइज्जत होती रही।"(२) दलित आदिवासियों की आज भी मानव अधिकार से वंचित रखा जा रहा है।

अल्मा कबूतरी उपन्यास में लेखिका ने छु-आछूत का जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है। राणा स्कूल जाता है तो अध्यापक उसका अपमान करते हैं। स्कूल में आने के कारण मास्टर जी द्वारा उसे मुर्गा बनाकर दिनभर खड़ा रहने की सजा दी जाती है। अध्यापक उसके जाति को लेकर उसे अपमानित करते हैं और अस्पताल का पालन करते हुए हैंडपंप का पानी पीने से रोकते है।"मास्टर जी ने कह दिया था-तू नल नहीं छुएगा। नल के आसपास भी देख लिया तो... याद रखना, यहां सिपाही आते हैं, पकड़वा दूंगा। प्यास के कारण उसका गला चटकने को आ गया, नल नहीं छू सका। "पानी!" मास्टर जी ने सुझाव दिया, "तालाब में से पीकर आ।" राणा देखता रह गया। पांचवी कक्षा का बच्चा। 'पानी की स्वच्छता' वाला पाठ अभी दो दिन पहले पढ़ाया था। मास्टर जी को पता नहीं कि तालाब में कज्जा लोगों के बच्चे टट्टी -पेशाब फेंकते हैं। औरतें- आदमी शौचते हैं!" (३)यह चित्र देख कर हृदय चीर जाता है लेकिन रूढ़िवादी भारतीय समाज में जातियता, छु-आछूत पूरी तरह से नष्ट नहीं हो पाई। इस विकृत मानसिकता के कारण दलित आदिवासियों के मन में डर पैदा होता है और वह बच्चे बीच में ही स्कूल छोड़कर माता-पिता के साथ रोजी -रोटी जुटाने में लग जाते हैं।

सदियों से चली आ रही जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था में उच्च वर्णीय समाज की रुढी परंपराओं को बनाए रखा है। 'मनुस्मृति' के विचारों का प्रभाव आज भी भारतीय समाज में दिखाई देता है। जो मनुस्मृति ज्ञान के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति होती है यह संदेश देती है वही मनुस्मृति शुद्र वर्ण के मनुष्य को ज्ञान से वंचित रखने में और समाज में भेदभाव बनाए रखने में सफल दिखाई देती है। क्योंकि आज भी आदिवासी इलाकों, ग्रामीण देहातों में भारतीय समाज का उच्च वर्ग अपनी श्रेष्ठता कायम रखने के लिए दलित आदिवासियों पर अत्याचार कर रहे हैं। इस उपन्यास का भृगुदेव इस वर्ण व्यवस्था का शिकार है। वह अपने ज्ञान के काबिलियत पर डॉक्टरी शिक्षा में दाखिला पता है परंतु भृगुदेव परीक्षा में प्रथम आकर उच्च वर्ण सहपाठियों के अत्याचार का पात्र हो जाता है। अन्याय अत्याचार तिरस्कार के

कारण उसे डॉक्टर शिक्षा बीच में ही छोड़नी पड़ती है। भृगुदेव मंदा को बताता है"मैडिकल की पहली परीक्षा में ही जब मैं प्रथम आया तो उच्चवर्णी लड़के बैर मानने लगे। नीचा दिखाने की जुगत में लगे रहते। हमारे पुश्तैनी पेशे का घृणित रुप में बखान करते। "मेरे सामने पॉलिश के लिए जूतों का ढेर रख दिया जाता। हॉस्टल में रिवाज-सा चल पड़ा कि जो धोबी जाति से हो, कपड़े धुलाओ, कहार हो, बर्तन मंजवाओ चमार हो तो... "शिकायत करने की बात कहता तो बुरी तरह से पीटते। "मेरे प्रतिरोध करने पर एक लड़के ने मेरी उंगलियों पर ब्लेड चला दिया। मैं पीड़ा से चीखूं उसके पहले मेरा मुंह भींच दिया।" (४)

अपने ऊपर होने वाले इस अत्याचार से तंग आकर भृगुदेव पढ़ाई तो छोड़ देता है लेकिन उच्च शिक्षित वर्ग को यह प्रश्न करता है कि"विद्या, शिक्षा आदमी को पशुओं से अलग करती है, ज्ञान उसको ब्रह्म के पास पहुंचाता है तो फिर यहां आपवाद क्यों?"शिक्षा का नतीजा तो मैंने देख लिया था, और अपने- आप से अधिक वार्डन का अपमान मन को कोंचता रहता, जिन्हें मेरे कारण ऐसा निर्लज्ज दंड झेलना पड़ा। मेरे कारण या उस मनुस्मृति के कारण? जहां शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं!"... लेकिन गांव के मास्साब ने तो यही सिखाया -बताया था कि गुरु की जाति का धर्म- कर्म केवल विद्यादान करना होता है अर्थात सब तरफ से गुरु । फिर वह अहंकारी लड़कों से क्यों क्षमा मांगी हमारे गुरुवर ने?"(५) स्कूल कॉलेज जैसे पवित्र स्थान पर दलित आदिवासी छात्रों के साथ इतना बड़ा घिनौना व्यवहार किया जाता है यह वैश्वीकरण के इस दौर में चिंता की बात है। आज भी हम देखते हैं कि जिन दलित आदिवासियों को अपनी काबिलियत पर नौकरी मिली है उनके साथ भी उनके वरिष्ठ लोग ब्लैकमेल करके अधिक से अधिक काम करवाते हैं।

पूंजीवादी मानसिकता से उत्पन्न मानवीय विस्थापन, आदिवासी राजनीति आदिवासियों को शिक्षा से दूर रखना, धर्मांतरण की राजनीति जैसे सवालों को एक साथ उठाते हुए आज के युग में आदिवासियों द्वारा अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रयासों अभिव्यक्त किया है। औद्योगिकरण के नाम पर जल- जमीन -जंगल से आदिवासी जनजातियों को निर्वाचित किया जा रहा है। इस प्रकार की अन्य समस्याओं को मैत्रेयी जी ने अपने उपन्यासों में उकेरा है और इन्हें हाशिये से निकलकर हम भी मानव है, हमें भी उतना ही हक है जितना कि यहां गांवों,नगरों और शहरों में रहने वाले मनुष्य को है यह संदेश लेखिका ने आदिवासियों, अभिजात जातियों, धर्मों में लिप्त लोगों को दिया है। मैत्रेयी जी ने अपने साहित्य में हमेशा उन लोगों के जीवन को प्रस्तुत किया है जो किन्ही कारणों से दबा- कुचला गया है, जो दुर्लक्षित है, उसकी संवेदना को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

संदर्भ सूची:-

१)अल्मा कबुतरी-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.९९

२)अल्मा कबुतरी-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.७७

३)अल्मा कबुतरी-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.८२

४) इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.३४२

५) इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.३४२,३४३